शोर (Noise) ⇒

संप्रेषण में शोर शब्द का अर्थ सिर्फ भौतिक स्तर तक सीमित नहीं है। शोर एक रुकावट है, जो कि संप्रेषण प्रक्रिया के दौरान समय के किसी भी बिन्दु पर में उभर सकता है और इसे विकृत एवं अप्रभावी कर सकता है।

हमारे आस पास का पर्यावरण शोर का एक प्रमुख स्रोत है - सड़क का ट्रैफिक, लाउडस्पीकर, दोषपूर्ण संचरण, इत्यादि

यह शायद सुनने में अटपटा लगे लेकिन संवाद प्रक्रिया में शोर अन्य रूपों में भी हो सकता है, जैसे कि लिखावट का अच्छा न होना, उच्चारण में दिक्कत, खराब रोशनी इत्यादि भी शोर के अन्य रूप है। वास्तव में यह सब कारक प्रभावी संप्रेषण के लिए बाधा का काम करते हैं। अविरल (Smooth) और प्रभावी संप्रेषण के लिए, शोर को यथा सम्भव कम करने या पूर्णतया समाप्त करना आवश्यक है।

पृष्ठभूमि में शोर अलग अलग ढंग से संप्रेषण की प्रभावशीलता पर प्रभाव डालता है। प्रथमतः यह श्रोता को सुनने से रोक सकता है जो कि उसके तनाव और चिंता का कारण बन सकता है, जो स्वयं में ही प्रभावी संप्रेषण के लिए बाधा है।

शोर मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

Notes Date

शोर के प्रकार (Type of Noise) :- शोर मुख्य रूप से चार प्रकार बताये गये है -

1⇒ शारीर क्रियात्मक शोर (Physiological Noise) :- यह व्याकुलता भूख, थकान, सिर दर्द, दवा आदि के कारण होता है।

2⇒ भौतिक शोर (Physical Noise) - उदाहरण के लिए मातामात हार्न, खराब रोशनी का होना

3⇒ मनोवैज्ञानिक शोर (Psychological Noise) :- यह दर्शाता है कि हमारी मानसिक स्थिति संवाद प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है हम कैसे दूसरो के कहे या लिखे शब्दो या संकेतो की व्याख्या करते है। यदि कोई शिक्षक तनाव मे है, तो कक्षा मे असावधान हो सकता है और उससे त्रुटिया हो सकती है। इसी तरह, पूर्वाग्रह और बचाव की मुद्रा जैसी भावनाओ भी संप्रेषण के साथ हस्तक्षेप कर सकते है।

4⇒ अर्थ सम्बन्धी शोर (Semantic Noise) :- यह तब होता है जब शब्द खुद को परस्पर समझ नही पा रहे होते है। लेखक कभी कभी शब्द जाल (Jargon) या परिहार्य (Avoidable) तकनीकी भाषा का उपयोग करके अर्थ शोर पैदा करते है।

Scanned with CamScanner

संप्रेषण में आने वाली प्रमुख बाधाएं (Communication Barriers) :-

हमने संप्रेषण प्रक्रिया के अंतर्गत शोर का वर्णन किया, वह एक प्रकार से संप्रेषण बाधा ही है। संप्रेषण प्रक्रिया में कई बाधाएं आ जाती हैं, फलस्वरूप प्रेषित संदेश या तो गलत ले जाता है या अपूर्ण रूप से ग्रहण किया जाता है। कभी कभी सम्प्रेषण सम्बन्ध भी टूट जाता है। सम्प्रेषण में आने वाली बाधाओं को निम्नलिखित प्रकार से सारणीकृत किया जा सकता है-

A. संगठनात्मक बाधाएं (Organizational Barriers) :-

ये बाधाएं संगठन के विकास के समय उत्पन्न होती है। इसके लिए निम्नलिखित को जिम्मेवार ठहराया जा सकता है:

1- संगठन का आकार
2- कर्मचारियों के बीच भौतिक दूरी
3- कार्य विशेषज्ञता
4- संगठन की संस्कृति: यह स्वतन्त्रता और विश्वास पर प्रभाव डालती है।
5- संगठनात्मक नियम और अधिनियम
6- संगठन में सत्ता संरचना
7- संगठनात्मक ढांचे में जटिलता
8- अपर्याप्त सुविधाएं और अवसर
9- वरिष्ठ और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच सहयोग की कमी

Scanned with CamScanner

Notes:-

Date

B. भौतिक एवं यांत्रिक बाधाएं (Physical and Mechanical Barriers) :- यांत्रिक बाधाओं को पारस्परिक और जनसंप्रेषण दोनो में शामिल किया जा सकता है यांत्रिक बाधाओं के कुछ उदाहरण है- रेडियो प्रसारण मे बाधा, टीवी स्क्रीन पर धुंधलापन, टेलीफोन उपकरणो में अक्षमता इत्यादि। भौतिक बाधाओं में शोर, अदृश्यता, वातावरण, भौतिक सुविधाएं, खराब स्वास्थ्य, ध्यान केन्द्रित न हो पाना, इत्यादि को शामील किया जाता है।

(i) प्रतिस्पर्धा करते हुए उद्दीपन (Competing Stimuli) :- हमारा ध्यान बंटाने के लिए वातावरण में बहुत सारे उद्दीपन प्रतिस्पर्धा कर रहे होते है, जैसे कि छात्र कक्षा मे पढ़ रहे हो तथा बाहर किसी छात्र संघ का चुनाव अभियान चल रहा हो, जिसमे कुछ ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक सी बात है।

(ii) प्राप्तकर्ता के माध्यम से अपरिचित होना (Receiver' Unfamiliarity with Medium) ⇒ यदि प्रेषक या प्राप्तकर्ता एक-दूसरे के माध्यम से अपरिचित हो, तो यह भी संप्रेषण बाधा का ही कार्य करता है जैसे प्रेषक और प्राप्तकर्ता अगर स्काइप के द्वारा वार्तालाप करना चाहे, तो दोनो को इसका उपयोग आना चाहिए।

Notes

Date

(iii) पर्यावरण से सम्बन्धित तनाव (Environmental Stress) ⇒ कक्षा में उच्च ताप, वायु संचालन का उपयुक्त न होना इत्यादि।

(iv) व्यक्तिनिष्ठ तनाव (Subjective stress) ⇒ अनिद्रा, खराब स्वास्थ्य, दवा का प्रभाव आदि।

C- मानसिक अवरोध या बाधाएं (Psychological Barriers) ⇒

i. व्यक्ति विशेष संदर्भ (Frame of Reference) ⇒ यह हमारी संस्कृति (आदर्श, मूल्य, आस्था - विश्वास आदि का मिश्रण), बाल्यावस्था के अनुभव, आनुवंशिकता पर निर्भर करता है। किन्ही भी दो व्यक्तियों का संदर्भ समान नहीं हो सकता तथा यह समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। यह एक आधारभूत परिमाण है कि हम संप्रेषण में जो अर्थ देते है जो कि यह दर्शाता है कि उसको एक व्यक्ति कैसे ग्रहण करता है।

इसके अलावा किसी संप्रेषण संदेश का अर्थ स्थिति पर भी निर्भर करता है जिसको हम स्थितिजन्य या परिस्थितिक संदर्भ भी कह सकते है। जब शिक्षक

Scanned with CamScanner

कक्षा या अभिभावक घर मे यह कहते है कि परिश्रम करो, तो परिश्रम करना विद्यार्थी जीवन के हर क्षेत्र पर लागू हो सकता है लेकिन परीक्षा के दिनो मे यह मुख्यत: अध्ययन पर बल देने के लिए होता है।

(ii) - आत्म छवि या स्वत: धारणा (Self image or Self concept): यह भी उपरोक्त वर्णित संदर्भ से ही संबंधित है। हर व्यक्ति अपने बारे मे कुछ छवि या धारणा बना कर रखता है और हमारी आत्म छवि अचेतन मन मे शब्दो का अर्थ निकालने मे एक भूमिका निभाती है। इसमे भी हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक एवं स्वयं के अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

(iii) अनुभव क्षेत्र (Field of Experience): विज्ञान के छात्र को शायद हिन्दी साहित्य की बाते ज्यादा अच्छी तरह से समझ मे न आए, जितना कि एक ~~मानवीकी~~ मानविकी विद्यार्थी को आने की संभावना रहती है।

(iv) संज्ञानात्मक मतभेद Cognitive Differences

→ संज्ञानात्मक को हम ज्ञान ~~संबंध~~ सम्बन्धी भी कहते है और यदि हमारी सोच या ज्ञान मे कोई मतभेद हो, तो उनको संज्ञानात्मक

Notes Date

मतभेद कहा जाता है। एक शरारती छात्र रैगिंग के विरुद्ध पोस्टर के अर्थ एवं उद्देश्य को अच्छी तरह समझता है, चाहे उसकी प्रतिक्रिया उतनी अनुकूल न हो।

(V) मानसिक डर या बचाव की मुद्रा (Mental Fear or Defensive Posturing) :- जो व्यक्ति डरा सहमा रहता है वह किसी भी संप्रेषण संदेश की प्रतिक्रिया में शीघ्र ही बचाव की मुद्रा में आ जाएगा और संदेश का सही अर्थ नहीं ले पाएगा। यदि एक शिक्षक कक्षा में यह पूछ ले कि शरारत किसने की है तो एक निर्दोष छात्र यह कह बैठे कि यह शरारत उसने नहीं की और शक के घेरे में आ जाए, इस प्रकार के मानसिक डर या बचाव की मुद्रा को दर्शाता है।

(vi) चयनात्मक धारणा (Selective Perception) → यह एक तरह का पूर्वाग्रह ही है, हम ऐसे उद्दीपनों को नजरअंदाज कर देते है जो कि हमारी पूर्व मान्यताओं के विरुद्ध हो और भावनात्मक या मानसिक परेशानी का कारण बन सकते है। मान लीजिए कि एक शिक्षक किसी छात्र के बारे में अनुकूल राय रखता है और वह छात्र खराब प्रदर्शन करे, तो वह शिक्षक उसके बारे में फिर भी अच्छा ही कहता है, उसकी गलतियो को नजरअंदाज कर दे, तो हम यह कहेंगे कि शिक्षक चयनात्मक धारणा से ग्रसित है।

Notes Date . .

(vii) <u>निस्यंदन</u> (Filtering) :- इसका अर्थ होता है कि सूचना में जोड़-तोड़ करके उसको ~~प्राप्त~~ प्राप्तकर्ता के अनुकूल बनाना, लेकिन इस प्रक्रिया में मूल संदेश में छिपा अर्थ बदल जाता है। इसको गेटवाइन भी कहा जाता है।